Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-15, Issue-1, June-2021
www.researchguru.net

अनुवाद : कला या विज्ञान

डॉ. रीटा एच. पारेख
आर्टस कोलेज, पाटण

'अनुवाद' एक यौगिक शब्द है। 'वद्' धातु में 'ध' प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बनता है। 'वद्' धातु का अर्थ है बोलना या कहना। 'वाद' शब्द में 'अनु' उपसर्ग के जुडने से 'अनुवाद' शब्द बनता है। 'अनु' उपसर्ग अनुवर्तिता के अर्थ में व्यवहृत होता है। इस तरह 'अनुवाद' शब्द का मूल अर्थ है 'पुनः कथन' या 'किसी के कहने के पश्चात् कहना।'

'अनुवाद' शब्द संस्कृत शब्द है जिसका प्रयोग बहुत प्राचीन समय से होता रहा है। आधुनिक काल में इसके अर्थ में परिवर्तन हुआ है। अनुवाद के लिए 'छाया' शब्द भी बडा पुराना है। प्राचीन भारतीय शिक्षा की गुरु-शिष्य परंपरा में गुरु के कहे हुए वचन को शिष्य दुहराता था। दुहराने की यह क्रिया 'अनुवचन' या 'अनुवाद' कहलाती थी। वेद भी तो श्रुति-परंपरा की ही निधि है, जिसे शिष्यने गुरु के मुख से सुन-सुनकर कंठस्थ किया, फिर उसने अपने शिष्यों को सुनाया और इस प्रकार शिष्योपशिष्य सुन-सुनकर कंठस्थ करने की यह परंपरा चलती रही। 'शब्दार्थ चिन्तामणि' कोश में अनुवाद का अर्थ-'प्राप्तस्य पुनः कथने' या 'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने' किया है, जिसका अर्थ है - पूर्व में कथित अर्थ का पुर्नकथन। वैदिक संस्कृत से लेकर लौकिक संस्कृत के अनेक ग्रंथों में 'अनुवाद' शब्द 'ज्ञात का कथन' या 'कही गयी बात को दुहराने' के अर्थ में बार-बार आया है।

आधुनिक युग को यदि हम अनुवाद का युग कहे तो अत्युक्तिपूर्ण नहीं होगा। वैसे अनुवाद प्राचीन काल से चलता आया है परंतु इसको महत्व वीसवीं सदी के प्रारंभ से मिला है। इसका मुख्य कारण है इस शताब्दी में हमारा आपसी संपर्क अत्यधिक बढा। मात्र आवागमन के साधन ही नहीं बढे अब तो घर बैठे इलेक्ट्रो मिडिया के माध्यम से हम एक दूसरे के नजदीक आ गए। आकाश में स्थित सेटेलाइट ने अपनी अहं भूमिका का निर्वाह किया है। बेहतरीन फिल्में, रचनाएँ, टी.वी., रेडियो पर देख-सुन सकते है। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढते हुए आदान-प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता की नई चेतना प्रबलता के साथ विकसित हुई है।

अनुवाद को प्राचीन काल से ही एक कला मानते आये है। आधुनिक युग में कुछ विचारकों ने उसे विज्ञान कहा है। कुछ लोग अनुवाद को एक कला या विज्ञान न मानकर एक शिल्प मानते है।

❖ **अनुवाद का कलागत आधार :**

अनुवाद को कला मानने का मुख्य आधार यह है कि 'सहज समतुल्यता' की खोज में अनुवादक को अक्सर पुनर्सृजन करना पडता है। अनुवाद वस्तुतः शाब्दिक भाषान्तर नहीं है। प्रत्येक भाषा की अपनी प्रकृति होती है और प्रत्येक लेखककी अपनी भावभंगिमा। इसलिए पूर्ण भाषान्तर तो सम्भव नहीं है। अनुवाद एक तरह से पुनरभिव्यक्ति है और लक्ष्य भाषा की अपनी शैली में ही वह संभव है। इस पुनरभिव्यक्ति में अनुवादक की कल्पना, भाव प्रवणता, सहजज्ञान और कला का बड़ा हाथ रहता है। दूसरी बात यह है कि अनुवाद का भी एक व्यक्तित्व होता है, उनकी भी एक शैली होती है। इसलिए अनूदित रचना एक मौलिक कृति

के समान होती है। सृजनशील लेखक अपनी भाषा-चातुरी से यथार्थ का अनुकरण करता है। उसे अपनी भाषा में वह प्रस्तुत करता है। अनुवादक उसी अनुकृति का अनुकरण करता है। यदि वह अनुवाद न लगे तो भी मूल लेखक की हत्या होती है और यदि वह केवल अनुवाद ही लगे तो भी मूल लेखक की हत्या होती है। "क्योंकि मक्खी की जगह मक्खी ही चाहिए, मरी नहीं। जीवित, जो उडान भरती हो, भिनभिनाती हो।"[१]

अनुवादको कला मानने का अन्य आधार यह है कि मूल कृति की आत्मा को अनुवाद में उतारने का काम अपने में एक कला है। मशीन कभी भी यह काम पूर्ण सफलता से नहीं कर सकती। कलाकार का वह 'छठ्ठा-इन्द्रिय' अथवा सहज ज्ञान ही है जो कृति के सौन्दर्य-बिन्दु को पहचानकर उसका संप्रेषण कर देता है।[२] कृतिकार के साथ पूर्ण रूप से तदाकार होकर उसकी आत्मा को पहचानने का काम वही कर सकता है जिसमें कलाकार जैसी संवेदना हो, सहानुभूति हो। यह कम महत्वपूर्ण बात नहीं है कि दुनिया के श्रेष्ठ अनुवादक श्रेष्ठ मौलिक कृतिकार भी थे। थियोडर सेवरी ने अपने 'अनुवाद की कला' नामक ग्रंथ में अनुवाद को कला मानने के अनेक कारण बताये है।[3] उनके अनुसार अनुवाद में 'निकटतम समतुल्यता' की सिद्धि शब्दों और पर्यायों के चुनाव पर निर्भर होती है और यह चुनाव अनुवादक के सौन्दर्य-बोध एवं व्यक्तित्व पर निर्भर है। उनके अनुसार वैज्ञानिक अनुवाद फोटोग्राफी की कला के समान है जिसमें भी कलाकार की प्रतिभा का बडा योग रहता है। अनुवादक का भाषा ज्ञान यान्त्रिक नहीं होना चाहिए बल्कि सहानुभूति, अन्तदर्शन और सजागता से युक्त होना चाहिए, जो कला मर्मज्ञता के गुण है। इनके अतिरिक्त अनुवाद की मूल प्रेरणा भी एक तरह से कविता या चित्र रचना की प्रेरणा के समान होती है। कलाकार की 'स्वान्तः सुखाय' की भावना को अनुवादक का भी मूल गुण माना जा सकता है क्योंकि अनुवाद करने से स्वयं अनुवादक को एक तरह का पारितोष मिलता है जो किसी भी कलाकार के लिए सृजनानुभव से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

अनुवाद को चयन करना पडता है। मूल लेखक जिस तरह अपने भावों की विशेष अभिव्यंजना के लिए चयन करता है उसी तरह अनुवादक भी लक्ष्यभाषा में प्रचलित ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, समास, संधि आदि का चयन करता है। इस चयन के द्वारा वह आदर-अनादर, औपचारिकता-अनौपचारिकता, मानकता-अमानकता, भाषिक प्रभाव, बोल-चाल के रूप आदि का संकेत करता है।

❖ **अनुवादः एक विज्ञान के रुप में :**

अनुवाद को विज्ञान माननेवालों की राय में अनुवाद एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें आद्यन्त कुछ निश्चित नियमों को मानकर चलना पडता है। पहली बात यह है कि - अनुवादक को तटस्थ होकर, सत्यनिष्ठता के साथ, ईर्ष्या, द्वेष अथवा अंधभक्ति से बचकर अनुवाद करना चाहिए। जैसा कि एक वैज्ञानिक अपनी रासायणिक वस्तुओं का ठीक ठीक नाप-तोल लेकर, दूरदर्श जैसे उपकरणों द्वारा वैज्ञानिक सत्य की जाँच करता है, उसी प्रकार स्त्रोतभाषा में व्यक्त विचारों को ठीक-ठीक समझने और संप्रेषण करने के लिए अनुवादक को कोश, व्याकरण आदि उपरणों का सहारा लेना

पडता है।[४] अनुवादक के पास वैज्ञानिक सा खुला दिल चाहिए जिससे समस्याएँ आने पर वह सभी स्त्रोतों से सहायता व परामर्श लेने के लिए तैयार रहे। उसे एक वस्तुपरक दृष्टिकोण अपनाना होगा। अनुवाद में जो 'छूट जानेवाली कडियाँ' होती है, उनको यथासंभव ठीक करने के लिए अनुवादक को कई बार मूल के साथ अपने अनुवाद का मिलान करना पडेगा। यह 'छूटी-कडी' की खोज एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। जिस धैर्य और संयम के साथ समस्या का विश्लेषण कर उसका समाधान ढूँढने के लिए वैज्ञानिक प्रयास करता है, उसी धैर्य के साथ अनुवादक को भी अपनी समस्याओं के लिए समाधान ढूँढना पडेगा। अनुवाद में वैज्ञानिक भाषा की भाँति शब्दों का नपा-तुला प्रयोग होता है। जिससे अर्थ का भार ज्यादा न पडे, न कम। वस्तुनिष्ठता और प्रामाणिकता श्रेष्ठ अनुवाद के गुण है और केवल वैज्ञानिक ढंग से अनुवाद करने पर ही अनुवाद में ये दोनों गुण आ सकते है।

अनुवाद का भाषा-वैज्ञानिक विश्लेषण अनुवाद को विज्ञान की कोटि में पहुँचा देता है क्योंकि हम अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में करते है। इन दोनों ही भाषाओं में विभिन्न वस्तुओं, भावों, क्रियाओं आदि के लिए अपने ध्वनि-प्रतीक है। जैसे-हिंदी में जल, मराठी में पानी, अंग्रेजी में Water । मराठी में जाना के लिए जागें, अंग्रेजी में GO, संस्कृत में गच्छ् है।

इन ध्वनि प्रतीकों के अलावा प्रत्येक भाषा की कारक, लिंग, वचन, काल, पुरुष, आदि को व्यक्त करने की अपनी व्यवस्था होती है। जैसे-संस्कृत और मराठी में तीन लिंग है, अंग्रेजी में चार तो हिन्दी में केवल दो लिंग है, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग।

इस तरह लिंग-वचन-कारक-सहायक क्रिया-विशेषण आदि की तुलना होती है। साथ ही दोनों की लिपि पर भी विचार किया जाता है। भाषा विज्ञान की तरह अनुवाद में भी ध्वनि, शब्द, रुप, वाक्य, अर्थ और लिपि पर विचार होता है। तुलना के द्वारा समानता-असमानता को परखा जाता है, तथा एक और भी कारण है जिसके फलस्वरुप अनुवाद विज्ञान की कोटि में आता है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकीय तथा पारिभाषिक अनुवाद मध्यात्मक तथा परीक्षणीय होता है। व्यवस्थित क्रमबद्ध रीति से होता है। आजकल अनुवाद मशीन (कम्प्यूटर) के कारण भी संभव है। अतः यह विज्ञान, विज्ञान के विपरीत कला सर्जन है।

❖ **अनुवाद : एक शिल्प :**

कुछ विद्वानों के अनुसार आज अनुवाद की सामग्री इतनी तथ्यात्मक, सूचनात्मक और तर्कात्मक है कि वह एक शिल्प से आगे नहीं बढता। विशेषकर पत्रकारिता, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा विज्ञान के क्षेत्र के आज जब तत्काल अनुवाद की माँग बढ गयी है और अनुवाद की यांत्रिक तत्परता से करना पडता है तो वह प्रायः एक शिल्प ही रह जाता है।[५] कहीं कहीं देखा गया है कि विशेष प्रतिभा के अभाव में भी अभ्यास के कारण कुछ लोग खूब अनुवाद कर लेते है, विशेषकर गैरसाहित्यिक विषयों का अनुवाद। ऐसे स्थलों पर अनुवाद एक शिल्प जैसा ही हो जाता है। परन्तु कई विद्वान उसे मात्र शिल्प मानने के लिए तैयार नहीं है। इयान फिनले के अनुसार अनुवाद एक शिल्प और कला दोनो है। उनके मतानुसार

भाषा के प्रयोग की जानकारी अगर शिल्पपरक पक्ष मात्र है तो अनुवाद का एक सृजनात्मक पक्ष भी है जो उसे एक कला बनाता है।[६]

❖ **अनुवाद : एक वैज्ञानिक कला :**

अनुवाद एक कला, विज्ञान अथवा शिल्प है इस प्रश्न का उत्तर देना यद्यपि आसान नहीं है तो भी उपर्युक्त चर्चा के निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि अनुवाद एक विज्ञान एवं कला दोनों है। अन्य शब्दों में वह एक वैज्ञानिक कला है। अनुवाद को केवल एक सीमा तक ही शिल्प मान सकते है क्योंकि केवल अभ्यास से ही कोई सच्चा अनुवादक नहीं बन सकता। उसके लिए कलात्मक रुचि एवं सृजनात्मक क्षमता भी आवश्यक है। अनुवाद की प्रक्रिया पूर्ण रुप से वैज्ञानिक है। परन्तु काव्यानुवाद में ही नहीं, वैज्ञानिक एवं तथ्यपरक अनुवाद में भी अनुवादक की कला का दर्शन होता है। तथ्यपरक अनुवाद में भी अनुवादक को कल्पना के प्रयोग की आवश्यकता पडेगी, लेकिन वह एक वैज्ञानिक ढंग की कल्पना होगी। इन सब के आधार पर हम कह सकते है कि अनुवाद एक वैज्ञानिक कला है। श्रेष्ठ अनुवाद के मानदंड के रुप में 'समतुल्य प्रभाव'[७] को मानने वाला सिद्धांत एवं 'गतिशील समतुल्यता'[८] का सिद्धांत आदि यही दिखाते है कि एक आदर्श अनुवाद में वैज्ञानिक दृष्टि कोण एवं कलात्मक रुचि का उचित समन्वय होता है। जहाँ तक अनुवाद के कार्य का प्रश्न है, वह एक वैज्ञानिक सिद्धांत मात्र नहीं है, उसके लिए अनुवाद की कला की आवश्यकता है। संक्षप में कह सकते की कलाधर्मिता मिलकर अनुवाद को एक वैज्ञानिक कला बनादेते है।

: संदर्भ संकते :

१. साहित्यिक कृति का अनुवाद - माधवसिंह दीपक

२. अनुवाद एक कलाकृति - एन. महापात्र

३. The art of Translation, Theodre Savory, P. 25-36.

४. Translation as a Science - anuvad, V. N. Vanchool.

५. 'अनुवाद एक शिल्प है', अनुवाद, डॉ. गोपाल शर्मा.

६. Translation, Preface, Ian F. Finle, P. 7.

७. Cassels Encyclopaedia of Literature, E. V. Rien, P. 554.

८. Toward a Science of Translation, O.A. Nida, P. 166.